खण्ड-13, अंक-1, वर्ष-2025, मु0प्र0 43-49
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v13i1.9
SJIF (2025) : 8.749

शोध पत्र

A study of access to menstrual hygiene products among female construction workers

K.M. Chaman[1] and Vijay Kumar[2]
[1]Department of Sociology, University of Lucknow, Lucknow-226 007, UP, India
[2]Department of Sociology, B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226 001, UP, India
aarohichaman@gmail.com, kvijay297@gmail.com

Received: 30-10-2025, Accepted: 30-11-2025

Abstract- Menstrual hygiene is a significant health and social issue among female construction workers. This study aims to assess access and use of menstrual hygiene products among female construction workers. The study found that most female construction workers face a lack of hygiene products during menstruation, leading to physical, mental, and social health problems. The study also found that due to a lack of education and awareness, female construction workers do not understand the importance of menstrual hygiene. The results of this study point to the need to increase access and awareness of menstrual hygiene products among female construction workers. Governments and non-governmental organizations need to implement menstrual hygiene programs and provide them with hygiene products. The findings of this study are important for improving the health and well-being of female construction workers and can be useful for policymakers and program implementers.

Key words- menstrual hygiene, female construction workers, health, awareness

महिला निर्माण श्रमिकों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों तक पहुंच एक अध्ययन

के. एम. चमन[1] एवं विजय कुमार[2]
[1]समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226 007, उ0प्र0, भारत
[2]बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ–226 001, उ0प्र0, भारत
aarohichaman@gmail.com, kvijay297@gmail.com

सार– महिला निर्माण श्रमिकों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता एक महत्वपूर्ण स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दा है। इस अध्ययन का उद्देश्य महिला निर्माण श्रमिकों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की पहुँच और उपयोग का आकलन करना है। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश महिला निर्माण श्रमिकों को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता उत्पादों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण, महिला निर्माण श्रमिक मासिक धर्म स्वच्छता के महत्व को नहीं समझ पाती हैं। इस अध्ययन के परिणाम महिला निर्माण श्रमिकों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की पहुँच और जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं। सरकारों और गैर–सरकारी संगठनों को मासिक धर्म स्वच्छता कार्यक्रमों को लागू करने और उन्हें स्वच्छता उत्पाद उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष महिला निर्माण श्रमिकों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं और नीति निर्माताओं और कार्यक्रम कार्यान्वयनकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

बीज शब्द– मासिक धर्म स्वच्छता, महिला निर्माण श्रमिक, स्वास्थ्य, जागरूकता

1. **परिचय–** भारतीय अर्थव्यवस्था अनौपचारिक क्षेत्र पर काफी अधिक निर्भर करती है। यह क्षेत्र भारत के सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। भारत जैसे विकासशील देश में अनौपचारिक क्षेत्र न केवल अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है, बल्कि यह देश के सबसे बड़े रोजगार देने वाले क्षेत्रों में से भी एक है। इस क्षेत्र में पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। महिला श्रमबल भागीदारी दर विभिन्न संरचनात्मक और सामाजिक–आर्थिक तत्वों से प्रभावित होती हैं। पिछले कुछ दशकों में श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी दर में वृद्धि देखी गई है। श्रमबल में महिलाओं की अधिक भागीदारी को बढ़ावा देना और उनका स्वागत करना देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय)[1] ।अनौपचारिक क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाएं कार्य करती हैं, जिसमें घरेलू कामकाजी महिलाएं, ब्यूटी पार्लर, सिलाई–कढ़ाई–बुनाई, होममेड, अस्पतालों, स्कूलों, कॉलेजों, निर्माण उद्योग, कृषि और मौसमी कृषि श्रमिक इत्यादि के रूप में शामिल हैं। वहीं कुछ महिलाएं सब्जी, मिठाई, फास्ट–फूड, खिलौनों का दुकान रखकर अपना जीवन निर्वाह कर रहीं हैं तथा कुछ महिलाएं गारा, मिट्टी, सीमेंट ढोने, बीड़ी उद्योग में कार्यरत है। इन सभी कार्यों को करते समय इनको कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महिला निर्माण श्रमिकों को भारी भार उठाने, लंबे समय तक खड़े रहने और धूल व रसायनों के संपर्क में आने के कारण श्वसन संबंधी समस्याएं और चोट लगने का खतरा होता है। अत्यधिक तापमान में काम करने और कठोर रसायनों

के संपर्क में आने के कारण वे गर्मी में तनाव, निर्जलीकरण और त्वचा संबंधी समस्याओं के प्रति भी संवेदनशील होती हैं। निर्माण क्षेत्र दुनिया का सबसे बड़ा औद्योगिक रोजगारदाता है। जो वैश्विक रोजगार का 7 प्रतिशत और औद्योगिक रोजगार का 28 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करता है। दक्षिण एशिया के देशों में महिलाएं ज्यादातर कम वेतन पर महत्वपूर्ण लेकिन अकुशल–अर्धकुशल कार्य करतीं हैं। भारत में यह अनुमान लगाया गया है कि, निर्माण श्रमिकों में 30 प्रतिशत महिलाएं कार्यरत हैं। जो उद्योग के निचले स्तर पर अकुशल या अर्धकुशल श्रमिकों के रूप में सिर पर बोझ उठाने वाले के रूप में कार्य कर रहीं हैं। भारत में निर्माण उद्योग को अगले 10 वर्षों में हर साल 7–8 प्रतिशत की वृद्धि दर की संभावना है। यह क्षेत्र भारत में कृषि के बाद आर्थिक गतिविधियों में दूसरा सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। इस क्षेत्र में लगभग 35 मिलियन लोग कार्यरत हैं और यह क्षेत्र प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह का महत्वपूर्ण चालक है (पटेल,.आर..एल. एवं पिट्रोडा, जे. (2016)[2]।

2 **पृष्ठभूमि–** श्रमिक महिलाओं का कुशल निर्माण व्यवसायों में बहिष्कार और उनका हाशिए पर होना एक वैश्विक घटना है। भारत दुनिया का अकेला ऐसा देश नहीं है जो महिलाओं को निर्माण क्षेत्र के व्यवसायों में भाग लेने से हतोत्साहित करता है। निर्माण क्षेत्र अक्सर पुरुष प्रधान क्षेत्र माना जाता है यहाँ महिलाओं को अक्सर का अकुशल कार्य ही करना पड़ता है। भारत में निर्माण उद्योग सबसे तेजी से विकास करने वाले क्षेत्रों में से एक है। जिसकी वैश्विक वृद्धि दर 10 प्रतिशत है (निर्माण उद्योग विकास परिषद 2003)[3]। विभिन्न देशों में निर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं के अनुभव भिन्न –भिन्न हो सकते हैं, लेकिन इन विभिन्नताओं के पीछे कुछ सामान समस्याएं देखी जाती हैं। विकसित और विकासशील देशों में निर्माण श्रम बाजार लिंग के आधार पर बटा हुआ है, जहाँ महिलाएं आमतौर पर कम वेतन और दोहरावे वाले कार्यों तक सीमित रहती हैं जबकि पुरुष उच्च वेतन और कुशल कार्यों में संलग्न होते हैं। दुनिया भर में महिलाओं के लिए कुशल निर्माण कार्यों में प्रवेश करना कई जगहों पर चुनौतीपूर्ण बना हुआ है (बरुआ.बी 2008, 199)[4]। यह क्षेत्र श्रमिक महिलाओं के लिए कई समस्याओं का कारण भी बनता है। इस क्षेत्र में अक्सर महिलाओं को कम रोजगार प्राप्त होता है। ज्यादातर काम पुरुष श्रमिकों को दिया जाता है, क्योंकि समाज में कुछ लोगों की अब भी ये धारणा है कि पुरुष वर्ग महिला वर्ग से शारीरिक रूप में ज्यादा शक्तिशाली होता है। हालांकि मौजूदा दृष्टिकोण यह दर्शाते हैं, कि बदलाव लाना आसान नहीं होगा क्योंकि निर्माण उद्योग में पुरुषों का वर्चस्व महिलाओं के लिए एक बाधा है। अधिकांश देशों में निर्माण उद्योग लगभग पूरी तरह से पुरुषों का क्षेत्र है, जबकि भारत में बड़ी संख्या में महिलाएं निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हैं।

3. **निर्माण क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक महिलाओं की समस्याएं–** निर्माण उद्योग दुनिया भर में सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है, फिर भी यह महिला श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य संबंधी गंभीर जोखिमें पैदा करता है। निर्माण उद्योग में महिलाओं को विभिन्न शारीरिक जरूरतों जैसे स्वास्थ्य सेवा की कमी और खतरनाक कार्यस्थल परिस्थितियों के कारण अनेक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मासिक धर्म एक प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया है जो दुनिया भर में लाखों करोड़ों महिलाओं को प्रभावित करती हैं। हालांकि, कई महिलाओं के लिए, विशेष रूप से निम्न–आय वर्ग और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं के लिए, मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों, स्वच्छता सुविधाओं और शिक्षा तक सीमित पहुंच के कारण मासिक धर्म एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। महिला निर्माण श्रमिकों को प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें मासिक धर्म संबंधी समस्याएं, गर्भावस्था संबंधी जटिलताएं और प्रजनन पथ के संक्रमण शामिल हैं। स्वच्छता सुविधाओं, स्वच्छ पानी और स्वच्छता उत्पादों तक पहुंच की कमी इन समस्याओं को और अधिक बढ़ा देती है, जिसके दौरान महिला निर्माण श्रमिकों को नौकरी की शारीरिक और भावनात्मक मांगो, सामाजिक समर्थन की कमी और उत्पीड़न व हिंसा के कारण तनाव, चिंता और अवसाद सहित मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के विकसित होने का भी खतरा रहता है। महिला निर्माण श्रमिकों को स्वास्थ्य सेवा तक पहुंचने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिनमें स्वास्थ्य बीमा का अभाव, स्वास्थ्य सुविधाओं तक सीमित पहुंच और नौकरी की असुरक्षा के कारण स्वास्थ्य समस्याएं घर करने लगती हैं। निर्माण उद्योग में महिलाएं अक्सर अकुशल श्रमिकों के रूप में कार्य करती हैं जिनके कारण उनको यौन उत्पीडन, लिंग पूर्वाग्रह, असमान वेतन जैसी समस्याएं उनमें देखने को मिलता है। इस क्षेत्र में कार्य करने का माहौल मुश्किल हो जाता है वह वर्षों तक अकुशल या अर्धकुशल श्रमिकों के रूप में कार्य करती रहती हैं। जिसके कारण उनको बहुत अधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है (देवी.के एवं किरन.यूवी, 2013)[5]।

4. **लखनऊ शहर के निर्माण उद्योग में कार्यरत श्रमिक महिलाओं की स्थिति–** जनगणना 2011[6] के अनुसार, लखनऊ की जनसंख्या 4,589,838 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 2,394,476 और महिलाओं की संख्या 2,195,362 है। जिसमें 2001 की तुलना में जनसंख्या में 25.82 प्रतिशत का परिवर्तन हुआ है। 2011 में लखनऊ के साक्षरता दर 77.29 थी, लखनऊ की कुल जनसंख्या का 66.21 प्रतिशत हिस्सा जिले के शहरी क्षेत्रों में रहता है। 2011 की जनगणना में लखनऊ जिले का घनत्व 1,816 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। 2011 में, उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में कुल 5,737 परिवार फुटपाथ पर या बिना छत के रहते थे। 2011 की जनगणना के समय बिना छत के रहने वाले लोगों की कुल जनसंख्या 18,119 थी। सिंह.ए एवं दुबे. जी.एम. (2025)[7] के अनुसार, भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में निर्माण उद्योग 2020–2025 की अवधि के दौरान 11 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ाने की उम्मीद है। यह क्षेत्र व्यापक रूप से दो प्रमुख खंडों में विभाजित है। संगठित और असंगठित (अनौपचारिक) क्षेत्र भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई), 2020[8]। संगठित क्षेत्र में सरकारी परियोजनाएं और बड़ी निर्माण कंपनियां शामिल हैं, जबकि असंगठित क्षेत्र में स्वतंत्र ठेकेदार और अनियमित श्रम शामिल हैं। असंगठित क्षेत्र भारत के निर्माण उद्योग में एक महत्वपूर्ण उपस्थिति रखता है जिसमें कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा कार्यरत है। निर्माण क्षेत्र लगभग 30 मिलियन श्रमिकों को रोजगार देता है, जिसमें महिलाओं की संख्या 51 प्रतिशत है। यह क्षेत्र

भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 5 प्रतिशत का योगदान करता है और देश के पूंजी निर्माण में 8 प्रतिशत का योगदान करता है (सेवा अकादमी, 2000)[9]। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ शहर के अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य कर रही श्रमिक महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं है। यहाँ पर कई राज्यों से प्रवास होकर श्रमिक, शहर के अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। शहर पर बढ़ता दबाव और बढ़ती आबादी एक चिंता का विषय है। जिस तरह से शहर का विकास हो रहा है उस तरह से अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य कर रहे श्रमिकों का विकास नहीं हो पा रहा है। देश में लगभग 70 प्रतिशत से अधिक आबादी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य कर रही है। निर्माण उद्योग जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है क्योंकि निर्माण क्षेत्र में कार्य करने के लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती है, जिसकी वजह से इस क्षेत्र में कृषि के बाद सबसे ज्यादा श्रमिक कार्यरत हैं। अकुशल श्रमिकों के रूप में महिलाएं बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। निर्माण क्षेत्र में कार्य करने के दौरान महिलाओं को अक्सर विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है।

भारत, विशेषकर लखनऊ जैसे बड़े शहरों में, निर्माण स्थल अक्सर पुरुषों के प्रभुत्व वाले वातावरण में होते हैं, जहाँ महिला श्रमिकों के बुनियादी जरूरत को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। उन महिलाओं को जो अक्सर दूर दराज के क्षेत्र में पलायन करती हैं। उनको मासिक धर्म के दौरान गरिमा और स्वास्थ्य के साथ जीने के लिए न्यूनतम सुविधाओं से भी वंचित रहना पड़ता है। यह केवल सुविधा का प्रश्न नहीं है, बल्कि गंभीर मानवाधिकार और सार्वजनिक स्वास्थ्य का मुद्दा है। मासिक धर्म में स्वच्छता उत्पादों तक महिलाओं की पहुंच की कमी, सुरक्षित और निजी शौचालयों का अभाव, और स्वच्छ पानी जैसी बुनियादी सुविधाओं की अनुपलब्धता इन महिला श्रमिकों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। इससे उनमें मूत्रमार्ग संक्रमण, प्रजनन संक्रमण और अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इन समस्याओं के कारण उन्हें काम से अनुपस्थित रहना पड़ता है, जिससे उनकी आय और परिवार की आजीविका पर सीधा असर पड़ता है। भारत में महिला निर्माण श्रमिकों के अधिकारों के रक्षा के लिए कानून मौजूद है, लेकिन उनका कार्यान्वयन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है।

5. **साहित्य की समीक्षा**– जाफर.एच, इस्माइल.एस.वाई. एवं अजेरी.ए (2023)[10] मासिक धर्म की गरीबी एक वैश्विक सामुदायिक स्वास्थ्य समस्याएं है जिसे अक्सर लंबे समय से नजरअंदाज किया जाता है। इस स्थिति को मासिक धर्म संबंधी उत्पादों, शिक्षा, एवं स्वच्छता सुविधाओं तक अपर्याप्त पहुंच के रूप में वर्णित किया जाता है। लाखों महिलाएं मासिक धर्म के कारण अन्याय और असमानता का शिकार होती हैं। इस शोध की समीक्षा करने पर यह पता चलता है कि अभी भी कई देश मासिक धर्म से जुड़े कलंक और वर्जनाओं, मासिक धर्म संबंधी स्वास्थ्य और उसके प्रबंधन के बारे में अपर्याप्त जानकारी, मासिक धर्म के बारे में शिक्षा का अभाव और मासिक धर्म संबंधी उत्पादों और सुविधाओं तक पहुंच की कमी से प्रभावित हैं। रोसांव.एल. एवं रांस.एच (2021)[11] महिलाओं और लड़कियों के मासिक धर्म स्वास्थ्य में सुधार, गरिमा, लैंगिक समानता और प्रजनन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत महत्व प्राप्त कर रहा है। मासिक धर्म स्वास्थ्य प्रबंधन (एमएचएम) में स्वच्छ अवशोषक सामग्रियों तक पहुंच शामिल है, लेकिन इन सामग्रियों के उपयोग के लिए निजी और सुरक्षित स्थान का होना भी जरूरी है यह अध्ययन सांद्रता सूचकांकों और अपघटन विधियों का उपयोग करके किंशासा (बीआरसी), इथियोपिया, गाना, केन्या, राजस्थान (भारत), इंडोनेशिया, नाइजीरिया, और युगांडा में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन में असमानता के अनुभवजन्य प्रमाण प्रदान करता है। सभी देशों में मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन की स्थिति और सेनेटरी पैड तक पहुंच में धन–संबंध असमानता के लगातार प्रमाण मिलते हैं। बानु.एस.आर एवं संमपथकुमार.एस (2018)[12] दुनिया के विभिन्न उद्योगों के बढ़ने में निर्माण उद्योग की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। निर्माण उद्योग विश्व श्रम शक्ति में 7.5 प्रतिशत का हिस्सा बनाएं हुए है। वहीं निर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं की कई सारी समस्याएं सामने आती हैं। तमिलनाडु के त्रिचिरापल्ली जिले के एक अध्ययन में पाया गया कि 84.2 प्रतिशत महिला श्रमिकों को मूत्र पथ के संक्रमण का मामला सामने आया है 15.8 प्रतिशत महिलाओं की ऐसी कोई शिकायत नहीं है और 70.7 प्रतिशत महिलाओं को मांसपेशियों से संबंधित समस्याएं देखी गई है कुछ महिलाओं ने कहा कि वे श्वसन सम्बन्धी समस्याओं से पीड़ित हैं इस क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं में हिंदू समुदाय की अनुसूचित जाति की महिलाएं ज्यादा थी और कुछ महिलाएं पिछड़े और सबसे पिछड़े समुदाय से संबंधित हैं। बोर्ड.एस.ए, बुकेन्या.जे.एन एवं अन्य (2023)[13] पूरे दुनिया भर में महिलाओं को अपने मासिक धर्म को प्रबंधित करने में विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मासिक धर्म और जननांग स्वच्छता संबंधी व्यवहार नकारात्मक स्वास्थ्य परिणामों से जुड़े पाए गए हैं, जिनमें मूत्रजननांगी संबंधी लक्षण और पुष्ट संक्रमण शामिल हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य युगांडा के मुकोनो जिले में कामकाजी महिलाओं में मासिक धर्म देखभाल प्रथाओं और स्व–रिपोर्ट किए गए मूत्रजननांगी संबंधी लक्षणों की व्यापकता का वर्णन करना और मासिक धर्म और जननांग देखभाल प्रथाओं और मूत्रजननांगी संबंधी लक्षणों के बीच संबंधों का परीक्षण करना था।

6. **शोध प्रश्न**

- महिला निर्माण श्रमिकों को उपलब्ध मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की गुणवत्ता और पहुंच कैसी है?
- मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की अनुपलब्धता या अपर्याप्तता के कारण महिला निर्माण श्रमिकों के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- महिला निर्माण श्रमिकों में मासिक धर्म स्वच्छता के बारे में जागरूकता और शिक्षा का स्तर क्या है?
- महिला निर्माण श्रमिकों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की पहुंच में सुधार के लिए नीतिगत और कार्यक्रमिक हस्तक्षेप क्या हो सकते हैं?

7. **शोध उद्देश्य**

- महिला निर्माण श्रमिकों को उपलब्ध मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की गुणवत्ता और पहुच का मूल्यांकन करना।
- मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की अनुपलब्धता या अपर्याप्तता के कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव, का मूल्यांकन करना।
- महिला निर्माण श्रमिकों को मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों के बारे में शिक्षा और जागरूकता के स्तर पता लगाना।
- महिला निर्माण श्रमिकों में मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों की पहुंच में सुधार के लिए नीतिगत और कार्यक्रमिक हस्तक्षेपों का अध्ययन करना।

8 **शोध विधि–** इस अध्ययन का उद्देश्य लखनऊ शहर में महिला निर्माण श्रमिकों के बीच मासिक धर्म स्वच्छता उत्पादों तक पहुंच की जांच करना है। यह शोध एक पायलट आधारित शोध पत्र है। इस शोध में मिश्रित विधि द्वारा श्रमिक महिलाओं की स्थिति और उनसे गहन बातचीत के दौरान उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक तथ्यों में संरचनात्मक एवं असंरचनात्मक साक्षात्कार, सर्वेक्षण तथा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा 10 महिला श्रमिकों से तथ्य इकट्ठा किए गए हैं। द्वितीयक तथ्यों में विभिन्न प्रकार के शोध–पत्र, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं, किताबें, सरकारी रिपोर्ट का प्रयोग किया गया है।

निर्माण क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक महिलाओं का साक्षात्कार सारांश–

क्रमांक	विवरण श्रेणी	विवरण
1	कुल साक्षात्कारित महिलाएं	10
2	सरकारी नाली निर्माण में कार्यरत महिलाएं	3
3	प्रवासी राज्य	छत्तीसगढ़
4	प्रवासी महिलाओं की संख्या	3
5	प्रवासी महिलाओं की आयु	30–40 वर्ष
6	प्रवासी महिलाओं की जाति	साहू (तेली, बनिया या कुछ और जाति)
7	प्रवास का स्वरूप	एक जिले से दूसरे जिले में कार्य हेतु प्रवास
8	स्थायी निवास	छत्तीसगढ़
9	परिवार का स्थान	छत्तीसगढ़, कुछ बच्चों के साथ वहीं रहते हैं।(आधा परिवार छत्तीसगढ़ में रहता है)।
10	समूह के अन्य सदस्य	वाराणसी, आगरा आदि जिलों में (श्रमिकों के रूप में) कार्यरत है।
11	उत्तर प्रदेश की निवासी महिलाएं	4 (लखीमपुर जिले से)
12	आयु (स्थानीय महिलाएं)	लगभग 30 वर्ष; एक महिला 50 वर्ष से अधिक
13	निवास स्थान (लखनऊ)	खुर्रमनगर, लेखराज मार्केट के आस पास
14	लखनऊ शहर के अंदर किराया 10000–15000 है (परंतु निर्माण श्रमिक महिलाएं 1000–1500 के किराए के मकान में रहती हैं)	इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि श्रमिकों का जीवन स्तर क्या है। और वह किस वातावरण में रह रहे हैं और कितना भोजन, स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा पर खर्च कर रहे हैं।
15	दैनिक मजदूरी	400–500 रु प्रतिदिन।
16	मासिक धर्म के दौरान इस्तेमाल	पुराने कपड़े (जो किसी अन्य काम के नहीं होते हैं)।
17	कपड़े का प्रकार	सूती कपड़े (कत्थई रंग का) जिसमें दाग पता ना चले।

18	धार्मिक व्यवहार	मासिक दिनों के दौरान पूजा पाठ, मंदिरों में स्वतः नहीं जाती हैं।
19	कार्य उपस्थिति	मासिक धर्म के दौरान भी नियमित कार्य करती हैं।
20	स्वास्थ्य समस्याएं	मांसपेशियों व घुटनों में दर्द, पेट दर्द, खुजली, मूत्रमार्ग संक्रमण
21	बीमारी के प्रति जागरूकता	शिक्षा के अभाव के कारण कम जागरूकता (जागरूकता तो है परंतु धनाभाव के कारण गंभीर से गंभीर बीमारी में भी वह जादू–टोना व ईश्वर के भरोसे रहती हैं)।
22	गर्भावस्था के दौरान कार्य	कार्य जारी रहता है, कभी–कभी भारी कार्य की वजह से गर्भपात हो जाता है।
23	प्रसव स्थिति	समय से पहले प्रसव, एक महिला ने बताया कि वह बच्चों के जन्म के एक दिन पहले तक काम कर रही थी।
24	सेनेटरी उत्पादों का उपयोग	सेनेटरी पैड का कम उपयोग करती है। मेंस्ट्रूअल कप के उपयोग के बारे में उनको जानकारी नहीं है।
25	मेंस्ट्रूअल की जानकारी	जानकारी का अभाव
26	शौचालय सुविधा (कार्यस्थल पर)	सुलभ शौचालय उपलब्ध नहीं या सही से साफ नहीं है। अधिकांश पिंक शौचालय बंद रहते हैं या उनके बगल में ही चाय या ठेला या मोटर वाहन की रिपेयरिंग होती है।
27	स्वछता समस्या	यौन संक्रमण और अस्वच्छ वातावरण
28	सेनेटरी पैड निपटान सुविधा	उपलब्ध नहीं, खुले में फेंकने से वातावरण को नुकसान होता है।

9. **तथ्य आधारित विश्लेषण–** प्रस्तुत शोध में निर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाली 10 महिलाओं से साक्षात्कार किया गया है, जिसमें तीन महिलाएं सरकारी नाली निर्माण में कार्य कर रही हैं। 10 महिलाओं में से 3 महिलाएं छत्तीसगढ़ से प्रवास करके लखनऊ शहर में कार्यरत हैं। उनकी आयु 35–40 वर्ष है उन्होंने अपनी जाति साहू बतायीं है। वे महिलाएं अपने पति के साथ कार्यस्थल पर काम करने जातीं हैं। श्रमिक महिलाएं एक जिले से दूसरे जिले में प्रवास करती हैं। कार्यस्थल के आसपास उनका अस्थायी निवास है। उनका स्थायी निवास छत्तीसगढ़ में है। उनके समूह के और लोग वाराणसी, आगरा इत्यादि जिलों में कार्य कर रही हैं। उनके बच्चे सहित अन्य परिवार छत्तीसगढ़ में है। कुछ महिलाओं के बच्चे उनके पास ही रहते हैं। 4 महिलाएं उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जिले की निवासी हैं उन्होंने अपनी आयु 30 साल बतायी। उसमें एक महिला ने 50 से उपर अपनी उम्र बतायीं हैं। ये महिलाएं लखनऊ शहर के खुर्रमनगर नगर में 1000–1500 के किराए के मकान में रहती हैं। कुछ महिलाएं लेखराज मार्केट के आस पास के इलाकों में किराए के मकान में रहती हैं। श्रमिक महिलाओं को एक दिन का 400–500 रुपए मिलते हैं। उनसे गहन बातचीत करने के बाद उन्होंने बताया कि वे अपने मासिक धर्म के दौरान उन कपड़े का इस्तेमाल करती हैं जिसका प्रयोग किसी काम में नहीं किया जाता है। उनका कहना है कि वो कपड़ा तो बेकार होता है इसलिए हम लोग जिस कपड़े का कोई इस्तेमाल नहीं होता है वहीं कपड़ा इस्तेमाल में लेती हूं। कुछ महिलाओं ने बताया कि वे बाजार से सूती कपड़े खरीद कर लाती है, जो कत्था रंग का होता है जिसमें दाग धब्बा पता नही चलता है। वे महिलाएं अभी भी मासिक धर्म के दौरान पूजा–पाठ 7 दिनों तक नहीं करती हैं। इस समय वे मंदिर के आसपास भी नहीं जाती हैं, लेकिन शुरू के एक–दो दिन छोड़कर वे काम करने प्रतिदिन जाती हैं।

श्रमिक महिलाओं ने बताया कि उनके मांसपेशियों में दर्द, घुटनों में दर्द, होता है। मासिक धर्म के दौरान वे पेट दर्द, यौन संक्रमण, कपड़े की गर्माहट की वजह से खुजली, लाल दाने, मूत्रमार्ग में संक्रमण से पीड़ित रहती हैं। शिक्षा के अभाव होने की वजह से मासिक धर्म के समय होने वाली बीमारियों पर वे ज्यादा ध्यान नहीं देती हैं। कुछ श्रमिक महिलाएं गर्भावस्था के दौरान भी निर्माण उद्योग में कार्य करती हैं कभी कभी ज्यादा भारी सामान उठाने की वजह से उनका गर्भपात भी हो जाता है। निर्माण क्षेत्र में कार्य करने वाली महिलाओं का गर्भावस्था के दौरान सही से देखभाल ना करने की वजह से उनका समय के पहले प्रसव हो जाता है, जिससे उनकी समस्याएं और बढ़ जाती है। एक महिला ने बताया कि कि वे बच्चा पैदा होने के एक दिन पहले तक काम कर रही थी। श्रमिक महिलाएं कोई सेनेटरी पैड, मेंस्ट्रुअल कप का

प्रयोग नहीं करती हैं। उन महिलाओं को मेंस्ट्रुअल कप के बारे में जानकारी ही नहीं है। कार्यस्थल पर श्रमिक महिलाओं के सुलभ शौचालय उपलब्ध नहीं होते हैं और जहाँ उपलब्ध होते है वो अच्छे से साफ–सुथरे नहीं होते हैं। यदि भूल से या बहुत जरूरी होने पर इसके प्रयोग से यौन रोग की संभावना बढ़ती रहती है। श्रमिक महिलाओं को कार्यस्थल पर सेनेटरी पैड बदलने या इस्तेमाल किया गया सेनेटरी पैड रखने की सुविधा नहीं होती है। यदि कुछ श्रमिक महिलाएं सेनेटरी पैड लगातीं हैं और यदि उसको खुले में फेंक दिया जाए तो वह पर्यावरण के लिए खतरा होता है। यदि वह उसको बदलती हैं तो उस दशा में कार्यस्थल पर सेनेटरी पैड बदलने की सुविधा नहीं होती है।

"नैशनल फैमिली हेल्थ सर्वे"[14] के नतीजे बताते हैं कि देशभर में 15 से 24 साल के बीच की 62 प्रतिशत युवतियां अब भी मासिक धर्म के दौरान कपड़े का इस्तेमाल करती हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार जिसका संबंध साल 2015–16 से है, में कहा गया है कि बिहार की 82 प्रतिशत युवतियां अब भी पीरियड्स के दौरान सुरक्षा के लिए कपड़े के टुकड़े का इस्तेमाल करती हैं जबकि छत्तीसगढ़ और यूपी में पीरियड्स के दौरान कपड़ा इस्तेमाल करने वाली युवतियों की संख्या 81 प्रतिशत है। मासिक धर्म के समय होने वाली परेशानियों की वजह से कभी कभी श्रमिक महिलाएं मानसिक तनाव का शिकार हो जाती हैं। एक महिला के बारे में पता चला कि एक बार यह महिला निर्माण स्थल पर कार्य कर रहीं थी उसी समय वही पर 4–5 लड़कियां आ गई जो कि वे लड़कियां नशें में धुत्त थी। वे लड़कियां उस महिला को जबरदस्ती डांस कराने लगी, जिससे उस महिला को डर लगने लगा, जिसकी वजह से अब कोई शोधार्थी उस महिला के पास तथ्य इकट्ठा करने जाते है तब से वह महिला किसी भी शोधार्थी लड़की से बात नहीं करती। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ। मैंने उस महिला से बहुत बार बात करने की कोशिश की लेकिन वह महिला बिल्कुल भी बात नहीं की और न ही उसने मेरे किसी प्रश्न का उत्तर दिया। कुछ महिलाओं के पति की मृत्यु उनसे पहले हो जाती है जिससे श्रमिक महिला के ऊपर घर की सारी जिम्मेदारीयां आ जाती है। श्रमिक महिलाएं अपने बुढ़ापे के लिए कहीं कोई बचत नहीं कर पाती हैं। कार्यस्थल पर श्रमिक महिलाओं को यौन उत्पीडन, लिंग पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ता है, लेकिन अगर श्रमिक महिलाओं में जागरूकता फैलाई जाए और सरकार द्वारा कोई अनोखे कदम उठाए जाए तो हम इस समस्या से थोड़ा छुटकारा पा सकते हैं।[15]

10. **निष्कर्ष**– किसी भी समाज में महिलाओं की स्थिति इस पैमाने से तय होती है कि उस समाज में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति कैसी है। निर्माण क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, क्योंकि यह अनौपचारिक क्षेत्र के निर्माण उद्योग में अकुशल श्रमिकों को सबसे ज्यादा रोजगार प्रदान करता है। निर्माण उद्योग औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक ढांचे का निर्माण करता है। इनमें से लगभग एक–तिहाई श्रमिक निम्न स्तर की कौशल और निम्न स्तर की शिक्षा वाली महिलाएँ हैं, और इन श्रमिक महिलाओं को काम से संबंधित कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे वेतन भेदभाव, लैंगिक असमानता और यौन उत्पीड़न, अस्वस्थ कार्य संबंध, कम वेतन इत्यादि। भारत सरकार द्वारा महिला निर्माण श्रमिकों में मासिक धर्म से संबंधित जागरूकता फैलाई जाय तथा उनके लिए हर महीने सेनेटरी पैड उपलब्ध कराए जाएं। उनको मेंस्ट्रुअल कप व साफ कपड़े प्रयोग करने के लिए जागरुक किया जाए क्योंकि खराब कपड़ों का प्रयोग करने से कई भयानक बिमारियां सामने आ रही हैं। श्रमिक महिलाओं की रोजाना आय ही 400–500 रुपए है जिससे वे अपने घर का पूरा खर्चा चलाती हैं। मासिक धर्म के दौरान होने वाली बिमारियां श्रमिक महिलाओं को सामान्य लगता है। श्रमिक महिलाओं में शिक्षा का अभाव होने के वजह से लगता है कि मासिक धर्म के दौरान अगर कोई दिक्कत होती है तो वो सामान्य है उसके दौरान उनको किसी प्रकार का दवा नहीं खानी चाहिए। वह धीरे–धीरे अपने आप ठीक हो जायेगा जिससे उनकी समस्याएं और दिन पर दिन बढ़ती जाती है। कुछ महिलाएं कार्य करने के दौरान नशें का पदार्थ भी लेती हैं जैसे कि पान, गुटखा–मसाले, सुर्ती, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू इत्यादि। इसके प्रयोग से उनका स्वास्थ्य और प्रभावित होता है। निर्माण उद्योग में जिन महिलाओं का रजिस्ट्रेशन हुआ है या जिन्होंने अपना रजिस्ट्रेशन खुद जाकर करा लिया है उनको तो सरकार बुढ़ापे में पेंशन देती है लेकिन जिन महिलाओं का रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ है उनको बुढ़ापे में किसी भी प्रकार की पेंशन, या सुविधाएं नहीं मिलती है। जितनी भी सरकारी योजनाएं श्रमिक महिलाओं के लिए लागू किए गए हैं उन योजनाओं के बारे में ज्यादातर श्रमिक महिलाओं को पता ही नहीं है। इस शोध पत्र का सुझाव है कि ज्यादा से ज्यादा निर्माण उद्योग में कार्य कर रही श्रमिक महिलाओं पर शोध हो और साथ में प्रत्येक शोधार्थी द्वारा श्रमिक महिलाओं के स्वास्थ्य और उनके अधिकार के बारे में शोध करें जिससे उनके बारे में अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा हो सके और सरकार, स्वयं सेवी संस्थाएं उन समस्याओं के समर्थन हेतु सरकार कारगर कार्यवाही कर सकें। सरकार द्वारा श्रमिक महिलाओं के लिए और योजनाएं लाएं जाए और जो योजनाएं पहले से लागू किए गए हैं उनको और प्रभावपूर्ण तरीके से लागू किया जाए तथा श्रमिक महिलाओं के मासिक धर्म से संबंधित उत्पाद सरकार द्वारा उनको निःशुल्क कराए जाएं और साथ ही साथ श्रमिक महिलाओं के अंदर स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता फैलाई जाए जिससे उनको ज्यादा गंभीर बीमारियों का सामना न करना पड़े। मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता उत्पादों की कमी पाई गई है, जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव देखने को मिला है। भारतीय समाज की कुछ सामाजिक सांस्कृतिक बाधाएं ऐसी है जो महिलाओं के विकास में एक बाधा बनी हुई है। यदि हम अपने योजनाओं और कार्यक्रमों में कुछ बदलाव करें तो श्रमिक महिलाओं का कुछ सीमा तक विकास किया जा सकता है।

References

1. Female Labour and Utilization in India, Employment Statistics in Focus -April (2023) Ministry of Labour and Employment of India.
2. Patel R.L. and Pitroda. J. (2016) The Role of Women in Construction Industry: An Indian Perspective, Conference: International Conference on Women in Science & Technology: Creating Sustainable Career (ICWSTCSC-2016)

3. Construction Industry Development Council, 2003
4. Baruah.B (2008) Gender and Globalization Opportunities and Constraints Faced by Women in the Construction Industry in India, https://1sj.sagepub.com
5. Devi.K and Kiran.UV (2013) Status of female workers in construction industry: A review, International Journal of Humanities and Social Science 14(4):27-30
6. www.census.2011.co.in hiips://wwwcensus2011.co.in
7. Singh A. and Dubey G.M. (2025) Shedding Light on the Socio-economic Status of Women Construction Workers in India.
8. Confedration of Indian Industry (CII),2020.10.Jaafar.H ,Ismail.S.Y ,Azzeri.A (May, 2023) Period Poverty: A Neglected Public Health Issue, 16;44(4):183-188. Doi: 10.4082/kjfm.22.0206, PMCID: PMC10372806 PMID: 37189262
11. Rossouw A. and Ross.H (March, 2021) Understanding Period of Poverty: Socio-Economic Inequalities in Menstrual Hygiene Management in Eight Low – and Middle – Income Countries, International Journal of Environmental Research and Public Health, PMCID: PMC7967348 PMID: 33806590
12. Banu S.R. and Sampathkumar S. (2018) Health issues of women construction workers: An Evidence from Tiruchirapalli, Tamilnadu, Volume -8| Issue-7| July -2018| ISS-2249-555X| IF:5.397| IC Value:86.18
13. Borg.S.A ,Bukenya.J.N ,Kibira.S.P.S ,Nakamya.P ,Makumbi.F.E ,Exum.N.G ,Schwab.K.J ,Hennegan.J (2023) The Accociation Between Menstrual Hygiene, Workplace Sanitation Practices and Self -Reported Urogenital Symptoms in A Cross – Sectional Survey of Women Working in Mukono District, Uganda, PMCID: PMC10358934 PMID: 37471386
14. Navbharat Times, https://navbharattimes.indiatimes.com
15. Dainik Bhaskar, Lucknow|20/03/25, https://www.bhadkar.com